समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

● प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०२२ ● वर्ष : २६ ● अंक : २ (निरंतर अंक : ३०२) ● भाषा : हिन्दी ● पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

राधसे जज्ञिषे । वेद वचन

'हे मनुष्य ! तू सिद्धि के लिए, आत्मसाक्षात्कार के लिए, ईश्वरप्राप्ति के लिए उत्पन्न हुआ है ।'

(ऋग्वेद : मंडल ५, सूक्त ३५, मंत्र ४)

...तो आपकी १५ प्रतिशत साधना हो गयी !

पढ़ें पृष्ठ ५

भगवान के लिए तीव्र तड़प और पुकार आपकी साधना में चार चाँद लगा देगी । सीधी उड़ान होगी, पक्की बात है ! आपका काम तो बन ही जायेगा, आपके परिवार का भी मंगल हो जायेगा । – पूज्य बापूजी

...क्यों अपनी संस्कृति का गला घोंटना !

~~सेठेथ~~ ~~मम्मी~~ ~~मदर-इन-लॉ~~ ~~आंटी~~ ~~अंकल~~

७वीं मैया सासु-माँ चाची चाचा

राष्ट्रभाषा दिवस १४ सितम्बर १८

परम सुख, परम ज्ञान की ओर ले जानेवाला दिवस

पूज्य बापूजी का ५९वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस : २७ सितम्बर ३

स्वास्थ्यरक्षक एवं सौंदर्यवर्धक

घृतकुमारी १५

ऐसा पवित्र प्रेम है जीवन की आधारशिला

शारीरिक प्रेम काम-वासना कहलाता है। ईश्वरीय प्रेम को भक्ति की संज्ञा दी जाती है। यह प्रेम परम पवित्र होता है। यह प्रेम, प्रेम के लिए ही होता है। यह प्रेम ही जीवन की आधारशिला है। जीवन का सिद्धांत प्रेमिल व्यवहार है। जीवन के इसी नियम-पालन में नित्य शांति तथा शाश्वत आनंद निहित है। ईश्वरीय प्रेम से ही जगत की उत्पत्ति, उसमें ही स्थिति और उसीमें लय है। निःस्वार्थ प्रेम ही विश्व की संचालिका शक्ति है। निर्विकारी प्रेम ही जीवन है। अद्वैत आत्मिक प्रेम ही आनंद है, यही आत्मा है, यही स्वर्णिम बंधन है जो हृदय को हृदय से बाँधता है।

निर्मल प्रेम का विधान सृजनात्मक है। यह निर्विकारी संबंध स्थापित करता है और नवनिर्माण करता है। यह प्रेम ही नवजीवन प्रदान करता है। प्रेम-तत्त्व का पालन आत्मविश्वास से कर सकते हैं। भगवद्भाव से किया गया प्रेम ऐसी संजीवनी विद्या है जिसके उपयोग से अद्भुत चमत्कार होता है। शास्त्र-प्रतिपादित प्रेम का सिद्धांत आधुनिक समय का महत्तम विज्ञान है।

जीवन की सार्थकता शुद्ध प्रेम में है, प्रेम करना ही जीवन है, प्रेम का पाठ सीखने के लिए ही आप जी रहे हैं। आप प्रेम इसलिए करते हैं कि नित्य जीवन का आनंद प्राप्त कर सकें। श्रद्धा, प्रेम तथा भक्ति बिना जीवन व्यर्थ है, वस्तुतः यही मृत्यु है।

सबमें ईश्वर या अपना आत्मा ही वास कर रहा है इस भाव से किये गये प्रेम से श्रेष्ठ कोई सद्गुण नहीं, इससे बढ़कर कोई सम्पत्ति नहीं, इससे बढ़ के न ही कोई ज्ञान है न धर्म। अद्वैत भाव से किये गये प्रेम से बढ़कर श्रेष्ठ कोई मत नहीं, यह प्रेम ही सत्य है और यही परमात्मा है। ईश्वर प्रेमस्वरूप है, सृष्टि के कण-कण में उसीका प्रेम महक रहा है।

ईश्वरीय साम्राज्य-प्राप्ति का सीधा व सरल मार्ग विशुद्ध प्रेम ही है। सृष्टि का जीवन-सिद्धांत यही है, आत्मिक शक्ति की यही श्रेष्ठतम अभिव्यक्ति है। धार्मिक कर्तव्यों का सार प्रेम ही है, एक भक्त का यही वशीकरण मंत्र है जिससे वह समस्त विश्व पर विजय प्राप्त कर पाता है। राधाजी, भक्तिमती मीराबाई, संत तुकारामजी, संत तुलसीदासजी, गौरांग महाप्रभु तथा मंसूर और शम्स तबरेज आदि की प्रेरक शक्ति प्रेम ही है।

निर्विकारी प्रेम में ही जियें, इसमें ही श्वास लें। परमात्म-भाव से सुशोभित प्रेम का ही भोजन करें, पान करें, उसके ही गीत गायें। संत-सम्मत पवित्र प्रेम का चिंतन करें, ध्यान करें, उसीकी प्रार्थना करें, बातें करें। निष्काम प्रेम में ही विचरण करें, आखिरी वेला में भगवत्प्रेम में तल्लीन होकर ही मृत्यु का आलिंगन करें, प्रेमाग्नि में मन-वचन-कर्म को शुद्ध करें, निर्मल प्रेमरूपी पुराण समुद्र में ही स्नान करें। शुद्ध प्रेमरूपी मधु-पान करके प्रेम की ही मूर्ति बन जायें।

सबमें ईश्वर या अपना आत्मा ही वास कर रहा है इस भाव से किये गये प्रेम से श्रेष्ठ कोई सद्गुण नहीं, इससे बढ़कर कोई सम्पत्ति नहीं, इससे बढ़ के न ही कोई ज्ञान है न धर्म।

लोक कल्याण सेतु

मासिक
समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २६ अंक : २ (निरंतर अंक : ३०२)
प्रकाशन दिनांक : १५ अगस्त २०२२ मूल्य : ₹ ४.५०
पृष्ठ संख्या : २६ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

*Email: lokkalyansetu@ashram.org,
*ashramindia@ashram.org
*Website: www.lokkalyansetu.org
www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹४५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹८०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹१९५		
(४) आजीवन :	₹४७५		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- परम सुख, परम ज्ञान की ओर ले जानेवाला दिवस.... ४
- तो आपकी ९५ प्रतिशत साधना हो गयी !..... ६
- अब मुझे फिर से अज्ञान कभी नहीं होगा – संत ज्ञानेश्वरजी.....७
- बड़ी विलक्षण है ज्ञान की महिमा.....८
- वैराग्य क्या है ? – स्वामी अखंडानंदजी.....१०
- खुजलाओगे तो खतरा है.....१२
- अपने सहज स्वरूप को सँभालो.....१३
- 'गिरा दो...'.....१५
- अंत्येष्टि संस्कार क्यों ?.....१७
- महापाप से बचाकर सूनी गोद भर दी – अंतिका..... १९
- स्वास्थ्यरक्षक एवं सौंदर्यवर्धक घृतकुमारी..... २०
- मच्छर से तो डर, सिंह से निडर... कैसे ?.....२२
- क्यों अपनी संस्कृति का गला घोंटना !..... २३

* 'अनादि' चैनल टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है।
* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

*** विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ***

अनादि बात सिर्फ खबर की — रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे
अराधना — रोज सुबह ७:३० व रात्रि ८:३० बजे
DIGIANA DIVYA JYOTI — रोज रात्रि १०-०० बजे

सेवाकार्य

Asharamji Bapu | Mangalmay Digital | Asharamji Ashram
आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

पूज्य बापूजी का ५९वाँ आत्मसाक्षात्कार दिवस :

२७ सितम्बर

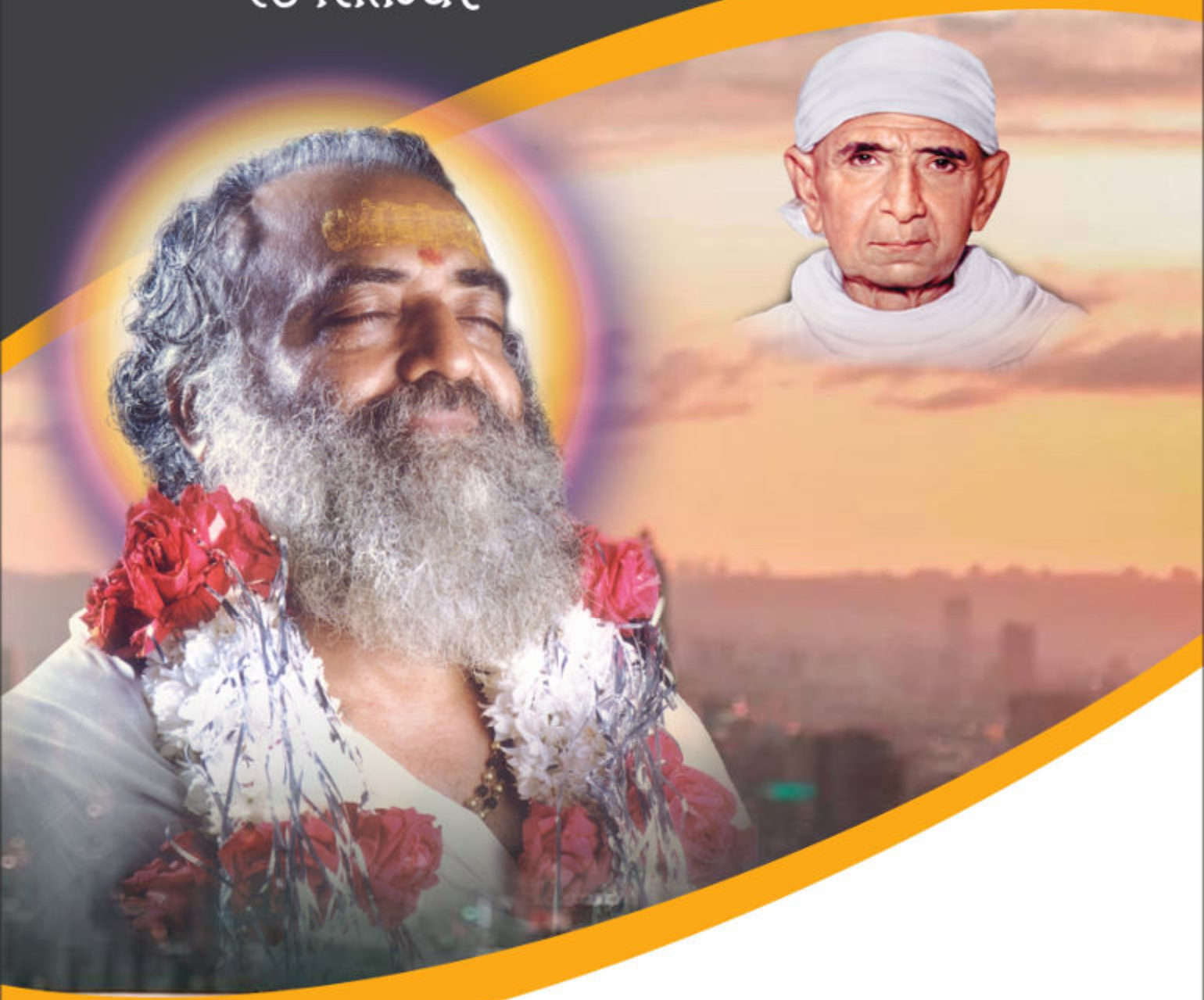

परम सुख, परम ज्ञान

की ओर ले जानेवाला दिवस

- पूज्य बापूजी

आत्मसाक्षात्कार आत्मा-परमात्मा के शुद्ध आनंद व शुद्ध ज्ञान की अनुभूति है और यह अनुभूति करनेवाला फिर बचता नहीं है। जैसे नमक की पुतली समुद्र को देखने जाय और कोई उसको धक्का दे दे : ''जा, समुद्र को देख के आ !'' तो नमक की पुतली का क्या हाल होगा ? समुद्रमय हो जायेगी । ऐसे ही आपकी बुद्धि जब परब्रह्म-परमात्मा में गोता मारती है और फिर गुरुकृपा का धक्का लगता है तो आपकी मति ऋतम्भरा प्रज्ञा हो जाती है, 'ऋत' अर्थात् 'सत्य' से भरी हुई बुद्धि हो

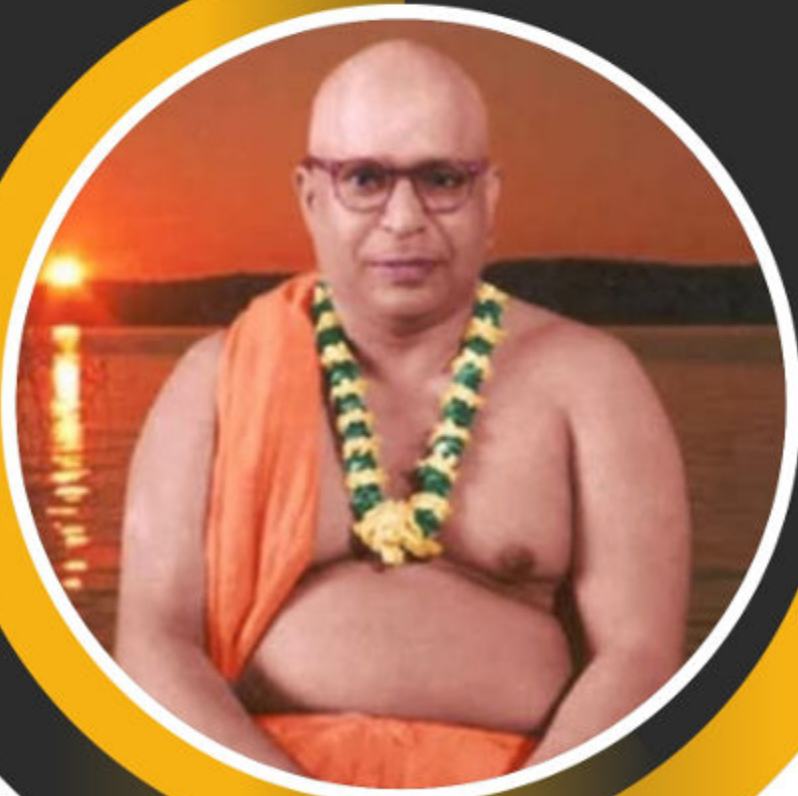

बड़ी विलक्षण है ज्ञान की महिमा

- स्वामी अखंडानंदजी

उपलब्धि जो होती है – किसी भी चीज का मिलना – वह तन से नहीं होता। व्यक्ति को बेहोश कर दिया जाय और उसके बाद तन से कोई चीज मिला दी जाय तो क्या मिलना हुआ ? बिना होश के शरीर से मिलने का कोई अर्थ है ? किसीको करोड़ों रुपये हों और मालूम न हो तो उसे वे करोड़ों रुपये मिलने का कोई अर्थ है ? उपलब्धि, प्राप्ति, ज्ञान – ये पर्यायवाची शब्द हैं। संसार में जितने कर्म हैं, जितनी उपासनाएँ हैं और जितने योगाभ्यास हैं, जितना संग्रह-परिग्रह है – सबका फल है 'उपलब्धि'। उपलब्धि माने मालूम पड़े।

मैं जब साधु नहीं था तब पहले-पहल एक मित्र के साथ वृंदावन गया था। हम रास्ते में चल रहे थे तो एक नन्हा-सा बालक आया। एक भी कपड़ा उसके शरीर पर नहीं, नंगा था। अब वह कभी आगे चले, कभी पीछे चले।

मैंने पूछा : ''कौन हो भाई ? क्या नाम है तुम्हारा ?''

बोला : ''मेरा नाम साँवरा है पर मेरी मैया मुझे मोरमुकुटवाला कहकर पुकारती है।''

अब कभी हँसे, कभी बोले बिना परिचय के। थोड़ी देर बाद साथ छूट गया। जब तक वह साथ था तब तक तो मन में यही था कि 'किसी व्रजवासी का, किसी गाँव का बालक होगा।' और जब वह

अंत्येष्टि संस्कार क्यों ?

हिन्दू संस्कृति में १६वाँ संस्कार

(गतांक से आगे)

(१) देहत्याग के समय क्या करें और क्यों ?

व्यक्ति अंतिम श्वास ले रहा होता है तो उस आतुर काल में भूमि को गाय के गोबर से लेपन करके शुद्ध करें और जल-रेखा से मंडल (घेरा) बनायें। फिर उस भूमि पर दक्षिणाग्र कुश (नुकीला अग्रभाग दक्षिण की ओर किये हुए कुश) तथा तिल को बिछा दें। मरणासन्न व्यक्ति को उस पर उत्तर या पूर्व दिशा की ओर सिर करके सीधा लिटा दें। सिर पर तुलसी का पत्ता रखें। उस व्यक्ति के मुँह में बीच-बीच में तुलसी-दल डला हुआ गंगाजल डालते रहें। ऐसा करने से वह पापमुक्त हो जाता है। घी का दीपक जला दें। मरणासन्न व्यक्ति के दोनों हाथों में कुशा रखें। 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जप करें। मरणासन्न व्यक्ति से उसकी सद्गति के लिए तिल, नमक, गाय आदि का दान करा दें। आतुर काल में लवण (नमक) दान करने से जीव की दुर्गति नहीं होती।

* मंडलयुक्त भूमि पर प्राण-त्याग करने से व्यक्ति को अन्य योनि प्राप्त करने में सहजता रहती है। अन्यथा उसकी जीवात्मा वायु के साथ भटकती रहती है।

* तिल, कुश और तुलसी - ये तीनों अत्यंत पवित्र पदार्थ मरणासन्न व्यक्ति को दुर्गति से उबार लेते हैं।

* शास्त्रों में गंगाजल व तुलसीपत्र - दोनों ही कल्याणकारी माने गये हैं। गंगाजी सर्वरोग-कीटाणुनाशक व पापनाशक हैं। इसलिए मृत्यु के समय मुँह में गंगाजल डालने से शरीर से जीवात्मा को निकलने में अधिक कष्ट नहीं होता। यमदूत नहीं सताते और जीव की आगे की यात्रा आसान हो जाती है। व्यावहारिक रूप से देखा जाय तो मुँह में जल डालने का उद्देश्य यह भी है कि शरीर छोड़कर जानेवाला व्यक्ति प्यासा न जाय। जब कोई व्यक्ति लम्बी यात्रा पर जा रहा होता है तो उसे पानी पिलाया जाता है।

* मृत्यु के बाद परलोक में व्यक्ति को यमदंड का सामना न करना पड़े इसलिए मरणासन्न व्यक्ति के मुँह में तुलसी का पत्ता रखा जाता है। इसका वैज्ञानिक कारण यह है कि तुलसी एक महौषधि है। साथ ही भगवान की परम प्रिय यह तुलसी मन में सात्त्विक भाव जगाती है इसलिए मुँह में तुलसी का पत्ता होने से प्राण त्यागने के समय होनेवाले कष्ट से राहत मिलती है।

* दीपक जीवात्मा के पथ को आलोकित कर

आयुर्वेद के अनुसार अनेक रोगों में उपयोगी घृतकुमारी (ग्वारपाठा, Aloe vera) अत्यंत महत्त्वपूर्ण औषधि है । निघंटु आदर्श ग्रंथ के अनुसार यह सेवन करनेवालों को अपने रसायन गुण के द्वारा पुष्टि तथा बल देने की कामना करती है।

यह स्वास्थ्यरक्षण एवं रोग-निवारण के साथ-साथ सौंदर्यवर्धन के लिए भी अति उपयोगी है। यह स्निग्ध, शीतल, त्रिदोषशामक, रक्तशुद्धिकर, कृमिनाशक, पेशाब को साफ लानेवाली एवं आँखों के लिए लाभदायी है। कब्ज, भूख की कमी, पेट के रोग, पेटदर्द, कृमि, पीलिया, खून की कमी, यकृत की वृद्धि (enlarged liver), तिल्ली का बढ़ना (splenomegaly), गाँठ, घमौरी, फफोले निकलना, चर्मरोग, पुराना (हड्डी का) बुखार आदि तकलीफों में यह अत्यंत लाभदायक है।

इसके सेवन से यकृत की क्रिया में सुधार होकर अन्न का पाचन ठीक से होता है। पाचन की मंदता के कारण जिनका शरीर दुबला-पतला एवं कमजोर हो गया हो उनके लिए घृतकुमारी का सेवन लाभदायी है । यह पाचनक्रिया को सबल बनाकर सप्तधातुओं का निर्माण उचित रूप से करने में सहायक है, जिससे बल एवं वजन शीघ्रता से बढ़ता है । साथ ही यह अपने रसायन गुण के कारण शरीर से विजातीय द्रव्यों (toxins) को दूर

...क्यों अपनी संस्कृति का गला घोंटना !

- पूज्य बापूजी

अंग्रेजी की पढ़ाई ने भारत देश को निचोड़ डाला है । बेचारे बच्चे तो निर्दोष होते हैं, उनका क्या कसूर परंतु अभी बच्चों में ऐसे संस्कार डाल दिये कि किसी बच्चे को पूछो : ''कौन-सी कक्षा में पढ़ता है ?'' तो बोले : ''७th में पढ़ता हूँ।''

हाय !... ये गुलामी के संस्कार हैं। सातवीं शुद्ध है, ७th अशुद्ध है। ८th में पढ़ता हूँ, १०th में पढ़ता हूँ, ११th में पढ़ता हूँ।

मैंने कहा : ''११th कभी मत पढ़ना, बहुत खतरनाक है। ८th भी नहीं पढ़ना, १२th भी नहीं पढ़ना।''

बोले : ''तो क्या पढ़ूँ ?''

''आठवीं पढ़ना, बारहवीं पढ़ना।''

ऐसे ही माँ को 'मम्मी, मम्मी' कह के बुलाते हैं। परिरक्षित मुर्दे को 'ममी' बोलते हैं। 'मम्मी' शब्द 'ममी' का ही अपभ्रंश है । क्या तुम्हारी 'माँ', 'आई' मुर्दा है ? नहीं।

'मेरी मैया', 'माझी आई' बढ़िया शब्द है न ? 'हाँ।' किसीने लिखा कि 'संडे नाइट को मैंने उसे देखा ।' मैकाले की कूटनीति, दुष्ट नीति से अब अंग्रेजी ऐसी हमारी मति में घुस गयी है कि लोग न

कल्याणकारी सत्साहित्य-संग्रह

रोगी-निरोगी, स्त्री-पुरुष, छोटे-बड़े - सभीके जीवन में एक नयी आशा का संचार करनेवाली, निर्भयता, निश्चिंतता की युक्तियाँ, मन को शांत एवं निर्दुःख रखने के उपाय व शास्त्रों के ज्ञान का सार देनेवाली १८ पुस्तकों का संग्रह

सस्ता साहित्य,
श्रेष्ठ साहित्य,
पढ़िये-पढ़ाइये अवश्य।

संतों के जीवन-चरित्र और प्रसंग

बच्चों व युवाओं हेतु विशेष

साधना में उन्नति व सुखमय जीवन हेतु

संग्रह खरीदने पर पायें एक नेत्रबिंदु मुफ्त !

संग्रह का मूल्य : ₹ १७५ (डाक खर्च सहित)

घृतकुमारी रस
(Aloe vera juice)

ऑरेंज फ्लेवर में

यह विविध त्वचा-विकारों, पीलिया, नेत्र व स्त्री रोगों, आंतरिक जलन आदि में लाभदायी है। त्रिदोषशामक, जठराग्निवर्धक एवं यकृत (liver) के लिए वरदानरूप है।

शंखपुष्पी सिरप

स्मृति व दिमागी शक्ति वर्धक रसायन

स्मरणशक्ति बढ़ाने हेतु यह एक दिव्य औषधि है। साथ ही यह मानसिक तनाव, थकावट, सहनशक्ति का अभाव, चिड़चिड़ापन, निद्राल्पता, मन की अशांति, चक्कर आना तथा उच्च रक्तचाप (hypertension) आदि रोगों में भी लाभप्रद है।

त्रिफला चूर्ण व टेबलेट

ये आँखों की सूजन व लालिमा, दृष्टि की कमजोरी, कब्ज, मधुमेह (diabetes), मूत्ररोग, त्वचा-विकार, जीर्णज्वर व पीलिया में लाभदायक हैं।

हरड़ रसायन गोली

यह अपचित भोजन को पचानेवाला व शरीर में स्थित कच्चे रस को पकाकर शरीर को शुद्ध करनेवाला उत्तम रसायन योग है। ये गोलियाँ त्रिदोषशामक हैं। इन्हें चूसकर खाने से भूख खुलती है। ये छाती व पेट में संचित कफ को नष्ट करती हैं।

निरापद वटी

यह संक्रमण का नाश कर तद्जन्य बुखार, कफ, खाँसी, कमजोरी आदि लक्षणों से शीघ्र राहत दिलाती है। संक्रमण के प्रभाव से आनेवाली कमजोरी को दूर करने में सहायक है।

स्पेशल मालिश तेल

यह तेल जोड़ों के दर्द के लिए अत्यंत उपयुक्त है। अंदरूनी चोट, पैर में मोच आना आदि में हलके हाथ से मालिश करके गर्म कपड़े से सेंकने पर शीघ्र लाभ होता है।

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

सुख, शांति, स्वास्थ्य नहीं चाहिए ? 'चाहिए', तो यह वही हो रहा है...

लोक कल्याण सेतु के 'योगयात्रा विशेषांक' का देशव्यापी प्रचार

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023
LWPP No. PMG/NG/045/2021-2023
(Issued by PMG GUJ. valid upto 31-12-2023)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

गाँवों से लेकर शहरों तक योग व उच्च संस्कार शिक्षा की बहती अखंड धारा

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक और मुद्रक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी